विषयानुक्रम

प्रमाण-पत्र

आभार

प्रथम अध्याय: प्रस्तावना

द्वितीय अध्याय: समाजभाषा वैज्ञानिक अध्ययन और लोकगीत

1.1 समाजभाषा वैज्ञानिक अध्ययन: परिचय
1.2 समाजभाषा वैज्ञानिक अध्ययन: विविध पक्ष
1.3 लोकगीत : परिचय
1.4 लोकगीत और समाज
1.5 लोकगीत और भाषा

तृतीय अध्याय मराठी लोकगीत

चतुर्थ अध्याय : मराठी लोकगीतों का भाषिक पक्ष

4.1 ध्वनि स्तर

4.2 शब्द स्तर

4.3 पदबंध स्तर

पंचम अध्याय : मराठी लोकगीतों का समाजभाषा वैज्ञानिक पक्ष

5.1 लोकगीत और सामाजिक संरचना

5.2 लोकगीत और सांस्कृतिक स्वरूप

5.3 लोकगीत और सामाजिक भाषिक स्तर

उपसंहार

प्रस्तावना

भाषा वह साधन हैं जिसके माध्यम से मानव अपने विचारों और भावों का आदान प्रदान करता हैं। जब भाषा का वैज्ञानिक अध्ययन करते हैं। भाषाविज्ञान में 'भाषा' शब्द का प्रयोग किया जाता हैं। भाषा अनंत वाक्यों का समुच्चय हैं। वाक्य के किसी भी शब्द सामान्यत: दो प्रकार कि सूचनाएँ मिलती हैं - एक उस शब्द का कोशीय अर्थ, जिसे वास्तविक जगत् में उस शब्द के संबंध में लोकगीत ऐसे गीत होते हैं , जो जनसमान्य द्वारा किसी विशिष्ट अवसर पर गाये जाते हैं। इन गीतों में समाज के सांस्कृतिक पक्षों की झलक दिखाई देती हैं।

लोगों के देवी-देवताओं उनकी मान्यताओं और उनके सामाजिक जीवन का वर्णन लोकगीतों में होता हैं। लोकगीतों द्वारा वे एक तरह से अपनी संस्कृति को अभिव्यक्त करते हैं। इन गीतों में पारिवारिक सामाजिक और सांस्कृतिक क्षेत्रों का समावेश हैं। जीवन के उद्देश्य, जीवन का महत्त्व, लोकगीतों के माध्यम से व्यक्त करना यह परम्परा सदियों से चली आ रही हैं। व्यक्ति लोकगीतों को मनोरंजन के साथ-साथ अपनी मनोदशा का भी वर्णन करते थे। यह विशेष अवसर को तलाश कर अपनी दशा, अपनी भावना, अपने इष्ट की आराधना करना यह सभी कार्य लोकगीतों के माध्यम से पूर्ण होते आ रहे हैं। कुछ गीतों में भावी जीवन के प्रति महत्वपूर्ण संदेश, आशिर-वचन होते हैं। कभी-कभी कुछ दु:खद घटनाओं के प्रसंग में भी लोकगीत गाए जाते हैं। लोकगीतों के आरंभिक दौर में लोगों के लिए यह सिर्फ मनोरंजन के साथ-साथ अपने भावनाओं को व्यक्त करने के लिए एक साधन होता था। लोग अपने रहन-सहन को देखकर इन लोकगीतों की निर्मिति करते थे। लोकगीतों का प्रचार-प्रसार एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को देते थे धीरे-धीरे यह प्रचलन बढ़ता गया, और फिर कालांतर में रूढ हो गया।

आज भी कुछ लोकगीत ऐसे हैं, जिन्हें पहले गाया जाता था वैसे ही आज भी गाया जाता हैं। लोकगीत सामाजिक सांस्कृतिक अभिव्यक्ति का सशक्त साधन हुआ करते थे। कुछ हद तक आज भी हैं। ये लोकगीत अनेक अवसर पर गाये जाते हैं , जैसे- उत्सव,

त्योहारो, सांस्कृतिक कार्यक्रमों विवाह प्रसंगो आदि में गाये जाते हैं। विवाह के विभिन्न प्रसंगों में अलग-अलग गीतों का प्रचलन आज भी जोरो से हैं, समाज के सभी वर्गों में उनकी संस्कृति के अनुसार गीतों को गढ़ा गया हैं, जिनमें उनके समाज का वर्णन, कुल-देव की आराधना, ससुराल पक्ष को 'गारी' गीतों से छेड़ना, विवाह में देवी पूजा के समय गौरी गीतों का गाया जाना यह संभवत: सभी समाजो में प्रचलित नहीं हैं, किन्तु जिन समाजों में प्रचलित हैं उनके लिए आनन्द का पल होता हैं। मराठी संस्कृति में भी इसी तरह के ऐसे अनेक प्रसंग होते हैं। जहाँ लोकगीत अनिवार्य रूप से गाये जाते हैं। जो उस प्रसंग की कुशल मंगलता से संपूर्ण होने और शुभता का प्रतीक माना जाता हैं। लोकगीतों के आरंभ में लोग अपने देवी देवताओं के गीत, समाज से जुड़े गीत गाते हैं। परिवार की मंगल कामना के लिए भी गीतों का प्रचलन हैं। कुछ गीतो में हँसी, मज़ाक, कथायें, बालगीत, लावणी, तमाशा, पोवड़ा लोकगीतों में निहित हैं। इन सभी का समाजभाषा वैज्ञानिक अध्ययन किया जाएगा, यह अध्ययन मराठी भाषा से संबंधित हैं। इस लघु शोध प्रबंध में लोकगीतोंका समाजभाषा वैज्ञानिक अध्ययन किया गया हैं। |